

14.3.19

पत्रावली पेश हुई। वकील इनप पद इपॉजिट। इनप पद की बहस एवं प्रस्तुत न्यायिक दृष्टांतों के मद्देनारे आवेदन पुनर्विलोकन पर मनन किया।

CPC आदेश 47 के अनुसार पुनर्विलोकन का परिच्छेद (नयरा) बहुत ही सीमित है। इसके लिए जो आधार हैं उनमें मामले में कोई नया तथ्य व महत्वपूर्ण साक्ष्य संज्ञा में लाया जावे जो पूर्व में अपरिहार्य कारणों से प्राप्त नहीं किया जा सका हो या अभिलेख को देखते ही कोई त्रुटि या भूल उल्लेख: दृष्टिगोचर/प्रकट हो या गिद्धे की त्रुटि दंडित की गई हो या अन्य कोई पर्याप्त कारण दर्शाते किये गए हो तो रिव्यू ग्राह्य किया जा सकता है।

प्राप्ति के प्राचीन-पत्र के अवलोकन से पुनर्विलोकन के लिए पर्याप्त आधार नहीं है। अपील में निर्णय तत्कीर्त करने का मूल कार्य विचारण न्यायालय का है, डिक्ली पचि जारी नहीं किये जाने के संबंध में विधिक प्रावधान हैं कि उसे बाद निर्णय जारी किया जा सकता है। प्राप्ति का प्रलेखित बहस में महती कथन है कि अप्राप्ति/गण पुनर्मासिंह व लूणासिंह को रिव्यू पिटीशन को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है परन्तु प्रकरण में मूल अनुगोच उक्त दोनों अप्राप्ति/गण से नहीं चाहा गया है इसलिए इनकी



राजस्व अपील प्राधिकारी
बाड़मेर

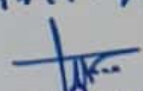
14.3.2019

अनापत्ति का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।
रिज्यू जर्नल-पत्र को ग्राह्य करना न्यायालय का
बाद विचारण विवेकाधीन है न कि पक्षकारों की
सहमति से स्वीकार कर लेना। द्वि में प्रतिवादी सं०
3 व 4 के द्वारा प्राप्त इकबालिफा जवाब श्री चाहे
जए अनुसंध के संदर्भ में ग्राह्य नहीं किया जा सकता।
आप्रीद्वारा द्वारा प्रस्तुत दृष्टान्तों का हवाला निर्णय में नहीं देना
श्री पुनर्विलोकन के जर्नल-पत्र को स्वीकार करने का
पत्राधिकार नहीं बनता।



उपर्युक्त विवेचन के कालोका में प्राप्त
रिज्यू आवेदन में पत्राधिकार एवं समुचित कारण विद्यमान
नहीं होने से रिज्यू आवेदन खारिज किया जाता है।
निर्णय को दृष्टान्त बनाया गया।

पत्रावली जैतल शुभ होकर ही कर है। दायित्व दफ्तर है।


राजस्व अपील प्राधिकारी
बाड़मेर